ग्रह-नक्षत्र और वर्षाविज्ञान

मुकेश कुमार गुप्ता 'अचल'
स्नातकोत्तर, ज्योतिष-विशारद
मौसमविज्ञानी-बी

खगोलविज्ञान

➢यह विज्ञान की वह शाखा है जिसके अंतर्गत पृथ्वी और उसके वायुमण्डल के बाहर होने वाली घटनाओं का अवलोकन, विश्लेषण तथा उनकी व्याख्या की जाती है।

➢ प्राचीन काल में राशि, ग्रह, नक्षत्र और अन्य खगोलीय पिण्डों का अध्ययन करने के विषय को ही ज्योतिष कहा गया था। इसके गणित भाग के बारे में वेदों में बहुत स्पष्टता से गणनाएं दी हैं, फलित भाग के बारे में बहुत बाद में जानकारी मिली है। खगोलविज्ञान के साथ फलित ज्योतिष (astrology) का बहुत ही नजदीकी सम्बन्ध रहा है और आज भी दोनो को अलग नहीं किया जा सकता।

➢*आर्यभट्ट, वाराहमिहिर ,गर्ग और ब्रह्मगुप्त प्रचीनतम भारतीय खगोलविज्ञानी माने जातें हैं।*

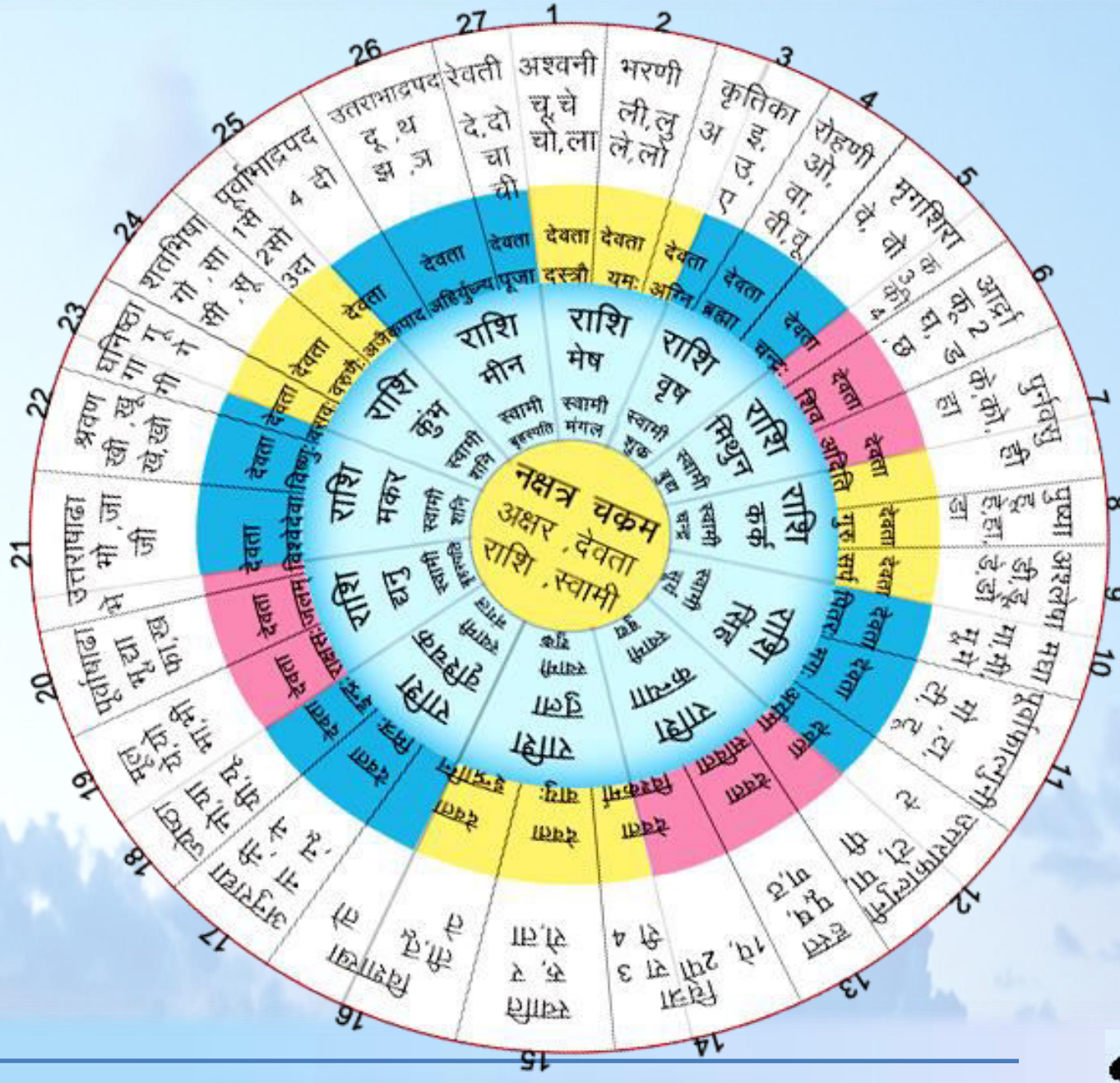

नक्षत्र चक्रम
अक्षर , देवता
राशि , स्वामी
1 अश्वनी चू,चे चो,ला
2 भरणी ली,लु ले,लो
3 कृतिका
4 रोहणी
5 मृगशिरा
6 आर्द्रा
7 पुर्नवसु
8 पुष्या
9 अश्लेषा
10 मघा
11 पूर्वाफाल्गुनी
12 उत्तराफाल्गुनी
13 हस्त
14 चित्रा
15 स्वाति
16 विशाखा
17 अनुराधा
18 ज्येष्ठा
19 मूल
20 पूर्वाषाढा
21 उत्तराषाढा
22 श्रवण
23 धनिष्ठा
24 शतभिषा
25 पूर्वाभाद्रपद
26 उत्तराभाद्रपद
27 रेवती
राशि मेष स्वामी मंगल
राशि वृष स्वामी शुक्र
राशि मिथुन
राशि कर्क
राशि सिंह
राशि कन्या
राशि तुला
राशि वृश्चिक
राशि धनु
राशि मकर
राशि कुंभ
राशि मीन

ग्रह

- सूर्य– ग्रीष्मऋतु, पूर्व-दिशा; अग्नि, आकाश, शुष्क, गर्म, पुल्लिंग; चन्द्रमा के साथ मिलकर मौसम को चरमसीमा की और ले जाता है, शुक्र के साथ मिलकर बादल/वर्षा का योग बनाता है।
- चन्द्रमा– वर्षाऋतु, उत्तरपश्चिम-दिशा; रात्रिबली, स्त्रीलिंग, खेती, ठंडी, तरल पदार्थ, पानी, गीलेपन ; मकर राशि में चन्द्रमा के साथ वर्षाकारक।
- मंगल– ग्रीष्मऋतु, दक्षिण-दिशा; रात्रि के अंत में बली, गर्मी, भूमि, अग्नि, पुल्लिंग, खेत, मौसम की पराकाष्ठा; सूर्य-शनि के साथ मिलकर सूखे का योग बनाना।
- बुध– शरदऋतु, उत्तर-दिशा; प्रातःकालबली, नंपुसकता, ठंडा, नमी, वायु, उच्चदबाव, साफ़ मौसम।
- गुरु– हेमंतऋतु, उत्तरपूर्व-दिशा; फसल, शीतल-मंद-समीर, शुष्कता, पुल्लिंग, साफ़ मौसम का कारक, ताप बढाने में सक्षम।
- शुक्र– वसंतऋतु, दक्षिणपूर्व-दिशा; जलस्थान, गर्म, नम, स्त्रीलिंग, मध्याह्नांतर, कृषि-उत्पाद, निम्नदबाव, हिमपात, आद्रर्ता। मंगल के साथ मिलकर तूफ़ानकारक ।
- शनि- शिशिरऋतु, पश्चिम-दिशा, नंपुसक, ठंडा, शुष्क, ठंडा सीलन युक्त मौसम, कमदबाव का क्षेत्र, ताप व वर्षा में गिरावट; सूर्य के साथ मिलकर धुंधला ठंडा मौसम बनाने वाला ; समान मौसम बनाकर रखने वाला; राहू / केतु से संबंध होने पर वर्षा के साथ ओले और विद्युतपात की संभावना होती है।

राशियाँ

पुरुष राशि --विसम राशि (मेष,मिथुन,सिंह,तुला,धनु,कुम्भ)

स्त्री राशि -- सम राशि (वृषभ,कर्क,कन्या,वृश्चिक,मकर,मीन)

दिनबली --सिंह,कन्या,तुला,वृश्चिक,कुम्भ,मीन।

रात्रिबली --मेष,वृषभ,मिथुन,कर्क,धनु,मकर।

मेष- *अग्नितत्व*, पूर्व-दिशा; शुष्क, उग्रप्रकृति, गर्म, वायुकारक, चर।

वृष - *भूमितत्व,* दक्षिण-दिशा; शीतल, कान्ति-रहित, नमी, अर्द्धजल-राशि ।

मिथुन- *वायुतत्व*, पश्चिम-दिशा; शुष्क, उष्ण।

कर्क - जलतत्व, उत्तर-दिशा; ठंडी, गीली ।

सिंह - *अग्नितत्व*, पूर्व-दिशा; उष्ण, शुष्क, निर्जल-राशि।

कन्या- *पृथ्वीतत्व,* दक्षिण-दिशा; वायुकारक, शीतल, शुष्क।

तुला - *वायुतत्व,* पश्चिम-दिशा; ठंडी , श्याम-वर्ण, जल-राशि।

वृश्चिक-*जलतत्व*, उत्तर-दिशा;अर्द्धजल राशि,मौसम की चरमसीमा की ओर ले जाने वाली।

धनु - *अग्नितत्व*, पूर्व-दिशा; क्रूर, शुष्क, अर्धजल-राशि।

मकर- *पृथ्वीतत्व*, दक्षिण-दिशा; ठंडी, तूफानकारक।

कुम्भ- *वायुतत्व*, पश्चिम-दिशा; स्थिरसंज्ञक, विद्युतकारक, उष्ण, अर्द्धजल।

मीन - *जलतत्व*, उत्तर-दिशा; ठंडी, नम।

नक्षत्र

पुरुष नक्षत्र- आर्द्रा, पुनर्वसु पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्ता, चित्रा व स्वाति।

स्त्री नक्षत्र- मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, रेवती, अश्विनी, भरणी, कृतिका, रोहिणी व मृगशिरा।

नपुंसक नक्षत्र- विशाखा, अनुराधा व ज्येष्ठा।

वर्षाकाल के दौरान *सूर्य और चन्द्र की विभिन्न नक्षत्रों में स्थिति* से वर्षा का विचार किया जाता है। इनकी स्थिति क्रमश:

- पुरुष व स्त्री हो तो वर्षाकारक;
- स्त्री व पुरुष हो तो अधिक वर्षाकारक;
- स्त्री व नपुसंक हो तो कम वर्षाकारक;
- स्त्री-स्त्री या पुरुष-पुरुष हो तो बादल छाये रहने की संभावना, तथा
- नपुसंक-नपुंसक हो तो अनावृष्टि समझना चाहिए।

सप्तनाड़ी चक्र

बारहवी शताब्दी के नरपति जयचर्या में सप्तनाड़ी चक्र का विस्तृप्त वर्णन है, इसमें अभिजित् सहित 28 नक्षत्रों को 7 भागों में बांटा गया है; प्रत्येक भाग (नाडी) के विशिष्ट लक्षण निम्नानुसार होते हैं:

प्रकृति	नाडी	नक्षत्र					स्वामी-ग्रह	फल
निर्जल	चण्डा	भरणी →	कृतिका ↓	विशाखा→	अनुराधा ↓		शनि	प्रचंडवायु, आंधी,तूफान
	वायु	*अश्विनी* ↑	रोहिणी	स्वाति	ज्येष्ठा		सूर्य	तेज हावा
	दहन		मृगशिरा	चित्रा	मूला	रेवती	मंगल	तापमान बढना
	सौम्य		आर्द्रा	हस्ता	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराभाद्रपद	गुरु	बादल बनना
जलद	नीर		पुनर्वसु	उत्तराफाल्गुनी	उत्तराषाढ़ा	पूर्वाभाद्रपद	शुक्र	वर्षा
	जल		पुष्य	पूर्वाफाल्गुनी	अभिजित्	शतभिषा	बुध	अच्छी वर्षा
	अमृत		आश्लेषा →	मघा ↑	श्रवण→	धनिष्ठा↑	चन्द्र	भारी वर्षा

नक्षत्रों में ग्रहों की स्थिति पर आधारित चक्र/ योग

❖आर्द्रा प्रवेश चक्र- मानसून की वर्षा के पूर्वानुमान के किये सूर्य के आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश के समय की ग्रहस्थिति को आर्द्रा प्रवेश चक्र कहते हैं, इसका खगोलीय व ज्योतिषीय विश्लेषण वर्षा पूर्वानुमान में बहुत सहायक होता है ; यहीं से वर्षा ऋतु का आरम्भ माना जता है (लगभग 21-22 जून) और आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य,अश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी, हस्ता और चित्रा इन 9 नक्षत्रों में सूर्य-संचरण की अवधि वर्षा-ऋतु कहलाती है(लगभग 24 अक्टूबर तक)।

❖सूर्य-संक्रांति चक्र- सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में जाने को ही संक्रांति कहते हैं। और राशि-परिवर्तन के समय की ग्रह –स्थिति चक्र को सूर्य-संक्रांति चक्र कहा जाता है।

❖रोहिणी-योग- आषाड़ माह के कृष्ण-पक्ष में चन्द्रमा जब रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करता है तो वह रोहिणी योग बनाता है, इस समय वायु एवं बादलों के आकार का निरिक्षण करके निकट भविष्य में वर्षा की मात्रा की जानकारी देते हैं। वायु का समय, वेग एवं अवधि; वर्षा की मात्रा व कालावधि का निधारण करती हैं।

❖सप्तनाडी चक्र- इस चक्र में सात नाड़ियों में चार-चार नक्षत्रों की कल्पना की गई है, जिनकी प्रकृति के आधार पर वर्षा का पूर्वानुमान किया जाता है।

❖ मेघ-गर्भ- बादलों की प्रारम्भिक उत्पत्ति।

नाड़ियों में ग्रह-स्थिति का फल

- सामान्यतयाः जो ग्रह अपनी नाडी में होता है, वह उसी नाडी का फल देता है; केवल मंगल जिस भी नाडी में होता है, उसका फल देता है ।
- एक नाडी में एक से अधिक ग्रह होने पर संयुक्त-प्रकृति के अनुसार फल देते हैं ।
- निर्जल नाडी में चन्द्र, बुध व शुक्र आदि एक से अधिक जलद ग्रह हों तो वह जलद नाडी बन जाती है ।
- जलद नाडी में सूर्य, मंगल व शनि आदि एक से अधिक निर्जल ग्रह हों तो वह निर्जल नाडी बन जाती है ।
- यदि चन्द्रमा, बुध, गुरु या शुक्र के साथ जलद नाडी में हो तो तब तक वर्षा होती है जब तक चन्द्रमा उस नाडी में रहता है ।
- चन्द्र, मंगल व गुरु एक ही नाडी में हों तो भारी वर्षा होती है।

मेघ-गर्भ

वराहमिहिर रचित 'बृहत संहिता' में मेघ-गर्भ धारण का उल्लेख है, अनेक अन्य खगोलविदों ने भी इसका विस्तृत वर्णन किया है, कश्यप ऋषि के अनुसार–

सितादौ मार्गशीर्षस्य प्रतिपद् दिवसे तथा।
पूर्वाषाढ़गते चन्द्रे गर्भाणां धारणं भवेत् ॥

अर्थात् मार्गशीर्ष शुक्ल-पक्ष में जब चन्द्रमा पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र में आता है तब वहाँ से गर्भ–लक्षण कहना चाहिए (लगभग दिसंबर मध्य; इस वर्ष 20/12/2017)।

- मेघ-गर्भ धारण के समय सामान्य आकाशीय लक्षणों में ग्रहों बिम्बों के आकार बड़े होना, ग्रहों की किरणें कोमल होना, नक्षत्रों के गमन मार्ग की दिशा उत्तर/उत्तर–पूर्व/पूर्वी होना, हवा का मध्यम व कोमल गति से चलना, आसमान साफ रहना, सूर्य व चन्द्रमा की चमक अधिक होना, चन्द्रमा/सूर्य के चारों ओर बादलों का गोलाकार वलय बनना, संध्या समय इन्द्रधनुष दिखना, मधुर गर्जन होना शामिल हैं।
- तत्पश्चात् आकाश में जिस दिन बादल दिखाई दें, वह उस मेघ का गर्भ-धारण कहलाता है।
- यह प्रक्रिया चैत्र शुक्ल पक्ष (लगभग अप्रैल मध्य) तक जारी रहती है।
- चन्द्रमा के जिस नक्षत्र में जाने से गर्भ होता है, उसके 195 सूर्य-दिवस के उपरान्त उसी नक्षत्र में चन्द्रमा के आने से प्रसव होता है।

उत्तम गर्भ के लक्षण

- बादल चाँदी या मोती के समान श्वेत हों या बादलों का रंग गहरा सलेटी हो.
- वायु उत्तर, उत्तर-पूर्व अथवा पूर्व दिशा से बह रही हो.
- आकाश स्वच्छ हो.
- प्रातःकाल / सायंकाल आकाश में चिकने और लालिमा युक्त बादल हों या इन्द्रधनुष दिखाई दें.
- गर्जना हो या बिजली चमके.

नक्षत्रफल

- उत्तम वर्षा- पूर्वाभाद्रपद,उत्तराभाद्रपद,उत्तराषाढ़ा,पूर्वाषाढ़ा और रोहिणी.
- वर्षा- शतभिषा,आश्लेषा,आर्द्रा,स्वाति और मघा.
- यदि गर्भ के समय नक्षत्र पर सूर्य, मंगल, शनि, राहू या केतु की दृष्टि हो तो वर्षा के साथ ओले भी पडतें है और विद्युतपात भी होता है.
- यदि नक्षत्र पर बुध, शुक्र या चन्द्रमा की दृष्टि या युति हो तो बहुत वर्षा होती है.

प्रसव (वर्षा) का समय

- शुक्ल पक्ष का गर्भ, कृष्ण पक्ष में और कृष्ण पक्ष का शुक्ल पक्ष में प्रसवित.
- दिन का रात्रि में और रात्रि का दिन में.
- संध्या का विपरीत संध्या में.
- विपरीत दिशा में अर्थात् यदि गर्भ के समय मेघ पूर्व दिशा से उठतें हैं तो वर्षा ऋतु में पश्चिम दिशा से उठेंगे, तदानुसार.
- हवा की दिशा विपरीत होगी.

गर्भोपघात के लक्षण

यदि प्रसव के समय विपरीत परिस्थियाँ हों तो गर्भ स्थिर नहीं रह पाता और वर्षा नहीं होती, इस अवस्था को गर्भोपघात कहतें हैं, इसके प्रमुख लक्षण इस प्रकार हैं:

- उल्कापात, ग्रहण, धूमकेतु का उदय होना.
- किसी दिशा में आकाश का लाल होना, तूफ़ान आना.
- भूकंप, भूस्खलन, विस्फ़ोट, बाढ़ आना, भयंकर आग लगना या गैस रिसाव.
- युद्ध का होना.
- भारी वर्षा का होना.
- ग्रहों का अतिचारी या मंदचारी होना.

ग्रह स्थिति / संचरण से वर्षा विचार

- बुध, शुक्र व शनि के उदय व अस्त के समय वर्षा होती है।
- शनि और मंगल के राशि परिवर्तन करते समय वर्षा होती है।
- ग्रह वक्री होने से भी वर्षा की संभावना बनती है।
- सूर्य, सिंह राशि में होने पर वर्षा का योग नहीं बनता लेकिन कर्क राशि में हो तो हल्की वर्षा होती है।
- शुक्र स्थित राशि से सप्तम राशि में चन्द्रमा, बुध, शुक्र व गुरु में कोई एक या अधिक ग्रह हों तो वर्षा होने के अच्छे योग होते हैं।
- जब बुध-गुरू, बुध-शुक्र, गुरू-शुक्र और शनि-मंगल की युति हो तथा उन पर बुध, शुक्र या गुरु की दृष्टि या प्रभाव न हो तो तेज हवा चलती है और तापमान बढ़ता है।
- सूर्य से धीमी गति वाला ग्रह आगे तथा तेज गति ग्रह पीछे रहने की स्थिति में अच्छी वर्षा के योग होते हैं।
- आगे मंगल और पीछे सूर्य हो, तो समस्त बादलों को सोख लेते हैं लेकिन आगे सूर्य और पीछे मंगल हो तो अच्छी वर्षा व फसल होती है।
- जब समस्त ग्रह सूर्य से आगे या पीछे हो तो अच्छी वर्षा होती है।
- सूर्य यदि बुध व शुक्र के समीप हो तो वर्षा होती है लेकिन बुध व शुक्र के मध्य में होने से वर्षा नहीं होती।

Outlook for 1992 Monsoon

ACHALA

Varsha Vigyan is that branch of Samhita Astrology which deals with, among other natural phenomena, rainfall.

This paper is only an attempt to draw up an all-India monsoon picture for the south-west monsoon season (June to September) of 1992. Over a period of time, some of the astro-meteorological principles, like the impregnation of clouds (Garbha-dharana), examination of winds together with their directions on certain specified dates every year (Vayu - parikshana) and then casting of astrological data like the Aridra Pravesha horoscope and watching the effects of the transit of planets through well known *chakras*, like the Sapta Nadi Chakra (for climatic and weather changes and fluctuations), Koorma Chakra (for the areas which will be influenced by transitting planets) and finally, Sanghatta Nakshatra Chakra for the over-all synthesis for all-India directions, have come to be established as the soundest methods known to astrologers.

Naturally Astro-meteorology has two sides: The pure astrological side which is examination of planetary movements and the study of terrestrial phenomena like that of winds, clouds and the flora and fauna.

Astrologically, enough sound indications can be made available about the rainfall-patterns. It has to be supplemented locally by astrologers in their own regions for the over-all correct forecast. Even otherwise whatever is foreseen astrologically, comes out correct more than sixty percent of the time.

In our age of big planning, no hydraulic structure can be planned without study of meteorological conditions. In ancient times, meteorology concerned itself with mainly rainfall for agricultural purposes. Now the scope has widened and there are fields like Aviation Services in which the modern meteorologists have done very well. Flood Forecasting which is not well anticipated, astrologers have always down better in this field. The modern meteorologist has improved considerably but is still unable to pin-point the area that would be hit finally.

Ancient meteorological principles can meet the needs of modern age to a large extent but not with such unerring accuracy as it would have if the two, the modern meteorological and ancient astrological methods could be fused into one effective method of weather-forecasting.

The ancient system has all ranges, long, medium and short, while the modern meteorologists have a ten-day range of accuracy only in USA. Elsewhere it is failing even in short and very short range of rainfall prediction as the World Cup Cricket Matches in Australia in 1992 have proved.

Against this background the Aridra Pravesha Horoscope for 1992 (7.24 p.m. on 21st June 1992) has to be examined not without pointing out that this is a popular method among north Indian astrologers. Rains start in south India with the Sun in Mrigasira and reach north India after it enters Aridra (6-40 to 20 degrees Mithuna).

	MARS 11-20		SUN 6-40 MERC.27-53 KETU 6-55 VEN.8-50
MOON 17-08	RASI for Delhi		
SAT.(R) 24-16.			JUPIT 14-38.
ASCDT. RAHU 6-55			

Notable Features

(a) This year Aridra Pravesha Lagna is Sagittarius, a fiery sign and its lord, Jupiter is also placed in a fiery sign Leo.

(b) There is Rahu in Lagna aspected by Ketu and the Sun and also two benefics, Mercury and Venus.

(c) It is however important to note that while Venus is combust, Mercury is ineffective being with the Sun and Ketu. Jupiter in Leo, a fiery sign, is not useful as far as rainfall is concerned.

(d) Saturn is retrograde in the 2nd house throughout the South-West Monsoon season turning direct only on 16th October by which time monsoon will be over.

(e) The position of the Moon in Aridra Pravesha Horoscope is as important as of the Lagna and Lagna-lord. Fortunately, the Moon is in Aquarius aspected by Jupiter.

(f) On the basis of water bearing elements (Jalamsa) different Rasis given by Mr. Uma Shankar Dube (*Pracheen Varsha Vigyan*), the planetary positions are as follows :-

भारत मौसम विज्ञान विभाग
INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

	Tatwa	Rasi	Planets	Jalamsa of the Rasi
1.	Fiery	Simha	Jupiter	0 %
		Mesha	Mars	25%
		Dhanu	Rahu	50%
2.	Earthy	Makara	Saturn	100%
3.	Airy	Mithuna	Venus, Ketu, Sun, Mercury	0%
		Kumbha	Moon	50%

Analysis

Inferences that flow from the features of the Aridra Pravesha Horoscope are as follows:

(a) While in 1991, the monsoon arrived late and except the 2nd fortnight of August, when there was excessive rain, it was mostly erratic and deficient. The overall average was however made up, which does not help a farmer who longs for timely onset of monsoon, smooth spread and timely withdrawal. At the end of the season, the total rainfall cannot be useful to rainfed areas of India which even today form about 70% of the territory of India.

(b) This year's planetary positions may remind us of the 1987 drought or of 1989 near-drought conditions when Madhya Pradesh and Rajasthan suffered badly. In 1989 it was the September rain which saved the situation. It might have helped the late monsoon crop only.

(c) It is very difficult to make predictions for the entire country with a high degree of accuracy unless local observations of winds and clouds are done systematically as described in ancient text-books. Yet an attempt can be made on very scientific lines by dividing India into sixteen parts (directions) as given in the map.

(d) Meteorologists divide India into regions of less rainfall (Alpa Varsha), medium rainfall (Madhyama Varsha) and heavy rainfall (Uttama Varsha). It is a very useful categorisation. On this basis, India can be put under the following three categories.

1. Regions of Alpa Varsha are those of seasonal normal rainfall less than about 75 cm. In this category come Jammu and Kashmir, Haryana, Punjab, Delhi, Chandigarh, Rajasthan, West Madhya Pradesh, Gujarat State, Madhya-Maharashtra, Marathwada, Coastal Andhra Pradesh, Karnataka (except coastal region).

2. Regions of Madhya Varsha are regions of seasonal normal rainfall about 75 to 150 cm. and cover Nagaland, Manipur, Mizoram, Tripura, Gangetic West Bengal, Orissa, Bihar, Plains of U.P., Vidarbha, Telengana, Rayalaseema, Tamilnadu and Lakshdweep.

3. Regions of Uttama Varsha are regions of seasonal normal rainfall greater than 150 cm. Andaman-Nicobar Islands, Arunachal Pradesh, Assam, Meghalaya, Sub-Himalayan West Bengal, Sikkim, Himachal Pradesh, Goa, Coastal Karnataka, Kerala and Hills of West U.P. fall in this group.

Expected Quantity of Rainfall

(a) In the Aridra Pravesha Horoscope, the Ascendant being East, between East and North (Pisces) there are two malefics and one benefic. It shows prolonged dry spell with erratically heavy downpour once in a while.

(b) Between North and West (Gemini) there is Mars in his own house which will be moving towards Ketu by September. To some extent this region will be affected.

(c) Between West and South (Virgo) all the benefics will be transiting during the entire SW-Monsoon season.

(d) Between South and East the picture appears to be quite balanced.

(e) When we talk about the quantitative trend of the rainfall, one should keep in mind the variation of rainfall from region to region. We get about 75% of the annual total rainfall during the SW -monsoon period only. This varies from place to place and region to region. Western India gets about 90% of the annual total rainfall in that region during this period while Southern India gets only 30 - 40%.

(f) If we divide the whole of India into sixteen parts directionwise taking Varanasi as the Centre, then the rainfall possibility seems like this -

Alpa Varsha - NW, WNW, W, WSW, SE, SSE

Madhyama Varsha - NNW, N, NNE, NE, ENE, E, ESE

Uttama Varsha - SW, SSW, S

When we consider the transit of the planets into different signs, the following factors must be kept in view

(a) Main Planetary changes* during SW -monsoon season are as follows :-

JUNE

Mercury in Mithuna	6.6.92
Mars in Mesha	6.6.92

* Planetary positions are based on Lahiri's Ephemeris.

भारत मौसम विज्ञान विभाग
INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

Mercury rises in West	9.6.92
Venus in conjunction	13.6.92
Venus in Mithuna	14.6.92
Mercury in Karaka	22.6.92

JULY

Venus rises in West	7.7.92
Venus in Karaka	8.7.92
Mars in Vrishabha	17.7.92
Mercury Retrogrades	20.7.92
Mercury sets in West	21.7.92

AUGUST

Venus in Simha	2.8.92
Mercury in opposition	2.8.92
Saturn in opposition	7.8.92
Mercury rises in East	10.8.92
Mercury turns direct	13.8.92
Venus in Kanya	26.8.92
Mercury in Simha	30.8.92

SEPTEMBER

Mars in Mithuna	1.9.92
Jupiter sets in West	2.9.92
Mercury sets in East	4.9.92
Jupiter in Kanya	11.9.92
Mercury in Kanya	15.9.92
Jupiter in conjunction	17.9.92
Venus in Thula	20.9.92
Jupiter rises in East	28.9.92

(b) The Sun is reaching 6 degree Gemini on 21 June, 1992 which gives expected date of onset of monsoon over North India.

(c) On 9 July, 1992 Mercury is in Cancer, a Poorna Jala Rasi and Venus joins him. This combination is favourable for rain. Mercury and Venus will remain in Cancer till August 2, 1992. After this there may be break in monsoon since the Sun is between Venus and Mercury. (Sun 3° 17° 9' 28"; Mercury 3° 16° 55'; Venus 4° 0° 59')

(d) Mars will reach Vrishabha on 17 July, 1992 and Gemini on 1 October 1992; this period is good for rain in Northern India around these days.

(e) On 29 July 1992, the Moon joins two benefics Mercury and Venus and a malefic Sun in Cancer (a watery sign). This will be the best period for rainfall in the SW monsoon season of 1992.

(f) On 16 September 1992, the Sun enters Virgo Rasi which shows the period of withdrawal of monsoon from Northern India.

(g) On 26 September, 1992, the Sun enters Hasta Nakshatra which may give good rain in some areas of Bihar. In Bihar, folks call this rain as 'Hatia Rain' This will be followed by rain in East Bihar and North-East India when the Sun will enter Chitta Nakshatra.

(h) During 11-20 September 1992, Jupiter, Venus, Sun and Mercury will be in the 10th house (Virgo) representing South direction and Mars and Saturn, two malefics, aspect the 10th house; this is most unfavourable for rain in the southern part of the country.

(i) Following dates will be found very significant from the point of view of rainfall during SW-monsoon period:-

Month	*Dates*
JUNE	1st/2nd, 10th, 17th, 21st/22nd & 30th
JULY	11th, 15th to 20th, 25th/26th & 29th/30th
AUGUST	2nd, 13th & 27th/28th
SEPTEMBER	8th, 12th & 16th/17th.

Sapta Nadi Chakra

Narapati Jayacharya is a classical text of constellational Astrology. This was compiled by a great scholar Narapati in the 12th century after a deep study of all ancient texts. This text refers to the Sapta-Nadi Chakra, which deals with Varsha.

The scheme of the Sapta Nadi Chakra is as given in the Table below:

NADI	Prachanda	Pawana	Dahana	Saumya	Neera	Jala	Amrita
LORD	Sat	Sun	Mars	Jup	Ven	Merc.	Moon
CONSTELLATIONS	Krittika Visakha Anuradha Bharani	Rohini Swati Jyeshtha Aswini	Mrigasira Chitta Moola Revati	Aridra Hasta P. Ashadha U.Bhadra	Punarvasu U.Phalguni U.Ashadha P.Bhadra	Pushyami P.Phalguni Abhijit Satabhisha	Aslesha Makha Sravana Dhanista

If we look at the planetary movements in different Nakshatras during June-September 1992, the following factors become evident:-

(a) In June, most of the planets are in Pawana, Dahana and Saumya Nadi, so there may be slow progress of monsoon. The sky will look cloudy but with less rain.

(b) By 12 September 1992 Mars will be in Yamya Nadis and Jupiter will be ahead of the Sun. This may give more hot days this season.

(continued on page 564)

भारत मौसम विज्ञान विभाग
INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT

OUTLOOK FOR 1992 MONSOON

(continued from page 560)

(c) In July at least 5 planets will remain in Jala, Neera and Amrita Nadis. This will give rain during that period. In the beginning and in the middle of the month, one can expect heavy rain when the Moon remains in her own Nadi.

(d) In August most of the planets will be in Saumya, Neera and Amrita Nadis which is good for rain.

Conclusion

On the whole, **indications do not support a good monsoon this year.** Fortunately, Haryana, Punjab and Western U.P., India's best irrigated areas have become drought-proof. Yet it must be remembered that less rainfall lowers the under-ground water level and increases the cost of tubewell irrigation.

—89.92

Written on 2.5.1992

DIRECTIONS OF ARDRA PRAVESH LAGNA

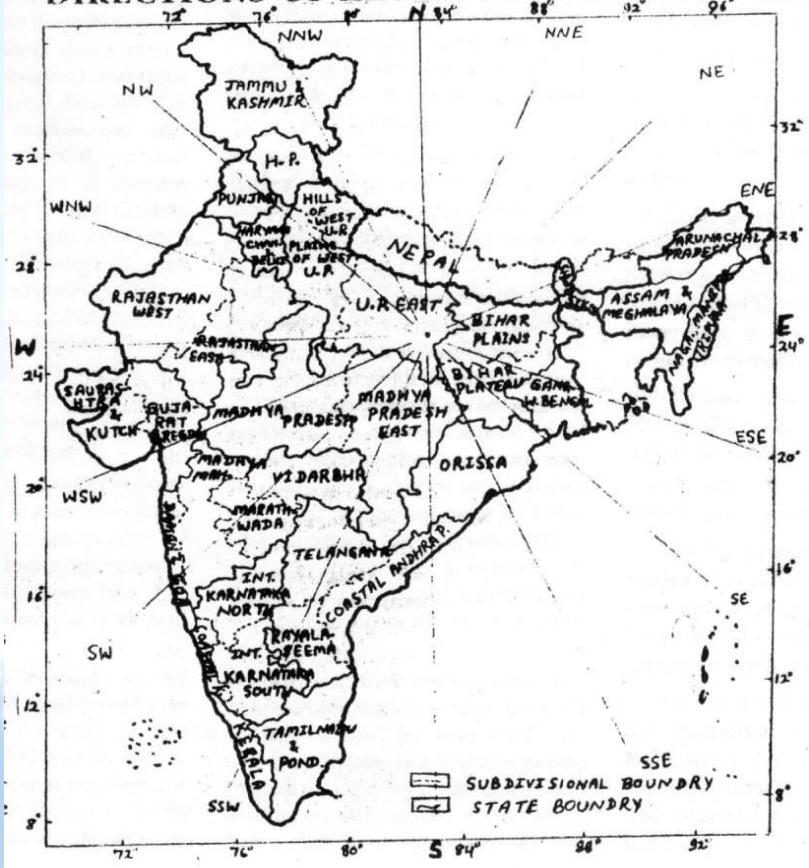

धन्यवाद